चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	20-12-23	4	3-6

कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

कार्यशालाओं से होगा शोधार्थियों में नवाचारों का संचार : प्रो. काम्बोज

हिसार, 19 दिसम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविधालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ।

पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य सरंक्षक विश्वविधालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे।

मुख्यातिथि प्रो. बी आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफैसर डॉ. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।

कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

कनाडा से पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया। पोलैंड से पहुंचे डॉ. टकाओ इशिकावा ने कहा कि कार्यशाला में आयोजित तकनीकी सत्रों में दिए व्याख्यानों से प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के जीन और एंजाइमों की पहचान कर फसलों के लक्षणों में सुधार करने के लिए सक्षम बनाएगा। इस कार्यशाला के आयोजक सचिव एवं बायोकैमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस, डॉ. विनोद गोयल और डॉ. अनुज राणा थे।

दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में ब्राजील के ब्रासीलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएं और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यरत प्रोफैसर वाल्मी हैजे फग्गिओं अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रही। उन्होंने कहा कि अनुवाद संस्कृतियों के बीच कड़ी का काम करता है और नई जानकारी, ज्ञान और विचारों को दुनिया भर में फैलाता है।

अनुवाद अध्ययन लोगों को कौशल विकसित करने और भाषा को सुधारने में मदद करता है। उन्होंने प्रतिभागियों से नए क्षेत्र में नए विचार के साथ प्रोजैक्ट बनाने के लिए भी प्रेरित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	20-12-23	11	2-6

हकृवि में चल रही दो अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन

अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं से होगा शोधार्थियों में नवाचारों का संचार : प्रो. काम्बोज

कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने व्याख्यान दिए।

हरिभूमि न्यूज ▸▸| हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय अनुवाद अध्ययनः एक अवलोकन रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य सरंक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया।

इस दौरान अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई। डॉ. नीरज ने कार्यशालाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत की दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में ब्राजील के ब्रासीलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएं और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यरत प्रोफेसर वाल्मी हैजे फग्गिओं अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रही। इस कार्यशाला के आयोजन सचिव भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अपर्णा और डॉ. पूनम मोर रही। समापन समारोह में पाठ्यक्रम निदेशक और मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया और कार्यशालाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. के.डी शर्मा ने धन्यवाद किया।

हिसार। कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। फोटो : हरिभूमि

शोधार्थी समय का सदुपयोग कर अनुसंधान पर जोर दें : डॉ. देवकी नंदन

कनाडा से पहुंचे अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों के अनुप्रयोग ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दी है जो कृषि वैज्ञानिकों को उन्नत गुणात्मक व मात्रात्मक उपज विशेषताओं के साथ नई फसल किस्मों को विकसित करने में सक्षम बनाती है।

विद्यार्थियों के बिना संस्थान अधूरा : डॉ. टकाओ

पोलैंड से पहुंचे डॉ. टकाओ इशिकावा ने कहा कि कार्यशाला में आयोजित तकनीकी सत्रों में दिए व्याख्यानों से प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के जीन और एंजाइमों की पहचान कर फसलों के लक्षणों में सुधार करने के लिए सक्षम बनाएगा। उन्होंने विश्वविद्यालय के शोधार्थियों के कौशल की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के बिना हर संस्थान अधूरा है। जरूरत है तो इन विद्यार्थियों को समय के साथ अपने आप को अपडेट करने व अपने ज्ञान, नवाचारों, प्रौद्योगिकियों और कौशल का विकास करने पर ध्यान देना चाहिए। इस कार्यशाला के आयोजक सचिव एवं बायोकेमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस, डॉ विनोद गोयल और डॉ अनुज राणा थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	20-12-23	4	6-8

हकृवि में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

कनाडा, पोलैंड, ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

हिसार, 19 दिसंबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही 2 अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययनः एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे।

इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।

हिसार स्थित हकृवि में आयोजित कार्यशाला में विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। -हप्र

मुख्यातिथि प्रो. बी आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में जाकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण ले सकें और विदेशी वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय में आकर नई तकनीकें व जानकारी प्राप्त कर सकें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	20-12-23	5	4-5

हकृवि में दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन

कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी कॉलेज में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विश्वविधालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।

डॉ. देवकी नंदन ने नया सोचने के लिए प्रेरित किया

केनाडा से पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	20-12-23	2	2-4

'कार्यशालाओं से नवाचारों का संचार'

जागरण संवाददाता, हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा। दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन, एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज रहे।

प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में जाकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण ले सकें। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. देवकी नंदन और पोलैंड के वारसा विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डा. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई। दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में ब्राजील के ब्रासीलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएं और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यरत प्रोफेसर वाल्मी हैजे फग्गिओं अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रही।

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज द्वारा कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए। • पीआरओ

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	20-12-23	4	6-8

कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिशा देने में सहायक

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययनः एक अवलोकन' रहा।

उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विवि के कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज रहे। मुख्यातिथि प्रो. बीआर कांबोज ने कहा की कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक हैं। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में संहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।

एचएयू की कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। स्रोत संस्थान

शोधार्थी समय का सदुपयोग कर अनुसंधान पर दे जोर : डॉ. देवकी नंदन : कनाडा से पहुंचे अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों के अनुप्रयोग ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दी है जो कृषि वैज्ञानिकों को उन्नत गुणात्मक व मात्रात्मक उपज विशेषताओं के साथ नई फसल किस्मों को विकसित करने में सक्षम बनाती है।

विद्यार्थियों के बिना संस्थान अधूरा : डॉ. टकाओ : पोलैंड से पहुंचे डॉ. टकाओ इशिकावा ने कहा कि कार्यशाला में आयोजित तकनीकी सत्रों में दिए व्याख्यानों से प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के जीन और एंजाइमों की पहचान कर फसलों के लक्षणों में सुधार करने के लिए सक्षम बनाएगा। उन्होंने विवि के शोधार्थियों के कौशल की सराहना की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	20-12-23	5	5-7

हकृवि में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन, कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं से होगा शोधार्थियों में नवाचारों का संचार : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 19 दिसम्बर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविधालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य सरंक्षक विश्वविधालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी आर. काम्बोज ने कहा कि समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में जाकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण ले सकें और विदेशी वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय में आकर नई तकनीकें व जानकारी प्राप्त कर सकें। प्रो. काम्बोज ने देश-विदेश के संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों का आभार जताया। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई। कनाडा से पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अपने अनुभव सांझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों के अनुप्रयोग ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दी है जो कृषि वैज्ञानिकों को उन्नत गुणात्मक व मात्रात्मक उपज विशेषताओं के साथ नई फसल किस्मों को विकसित करने में सक्षम बनाती है। उन्होंने विश्वविद्यालय के शोधार्थियों के कौशल की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के बिना हर संस्थान अधूरा है। इस कार्यशाला के आयोजक सचिव एवं बायोकेमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस, डॉ विनोद गोयल और डॉ अनुज राणा थे। दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में ब्राजील के ब्रासीलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएं और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यरत प्रोफेसर वाल्मी हैजे फग्गिओं अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रही। इस कार्यशाला के आयोजन सचिव भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अपर्णा और डॉ. पूनम मोर रही। समापन समारोह में पाठ्यक्रम निदेशक और मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया और कार्यशालाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. के.डी शर्मा ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक व शोधार्थियों के अलावा देश-विदेश के संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक भी मौजूद रहे।

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज द्वारा कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्मानित किए जाने का दृश्य।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	20-12-23	4	1-4

सेहत

गेहूं में मिलाकर करें मोटे अनाज का प्रयोग, सेहत के लिए होगा लाभदायक

सर्दी के मौसम में बाजरे के उपयोग से बढ़ेगी प्रतिरक्षा

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। सर्दी के मौसम में मोटा अनाज खाने व मोटे अनाज से बने उत्पाद खाने से स्वास्थ्य को अधिक फायदा होगा। मोटे अनाज में फाइबर, मिनरल, आयरन, कैल्शियम और जिंक की मात्रा ज्यादा होती है। जो सेहत के लिए अच्छी होती है। ज्यादा देर तक एनर्जी मिलती रहती है।

बाजरे के लड्डू का सेवन करने से वजन भी कम होता है। सर्दी के मौसम में बाजरे का उपयोग अधिक होता है। यह हमारी इम्युनिटी पावर को भी बढ़ाता है, हमें बीमारियों से बचाता है। बाजरे की रोटी, बाजरे के लड्डू, बाजरे का केक, बाजरे की खिचड़ी, बाजरे का पिज्जा भी बनाकर खा सकते हैं।

मोटे अनाज से बने उत्पाद स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होते हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में बाजरे से बने उत्पाद केक, बिस्कुट और लड्डू एक दिन पहले ऑर्डर देकर मंगवा सकते है। बाजरे के बिस्कुट व केक की मांग भी ज्यादा है। सर्दियों के मौसम में इसकी मांग भी बढ़ी है। विश्वविद्यालय के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में मोटे अनाज को लेकर शोध कार्य चलते रहते हैं। इतना ही नहीं विश्वविद्यालय की ओर से लोगों को मोटे अनाज के लिए प्रेरित भी किया जा रहा है। सरकार ने 2023 को मिलेट्स इयर घोषित किया हुआ है। इसको लेकर एचएयू की तरफ से भी मोटे अनाज को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम व जागरूकता शिविर भी लगाए जा चुके हैं। एचएयू में रागी, सामक और कांगनी को लेकर शोध चल रहा है। कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि मिलेट्स को बढ़ावा देने के लि कार्यक्रम और अनुसंधान चल रहा है ता किसानों की आय भी अच्छी हो औ स्वास्थ्य भी बना रहे।

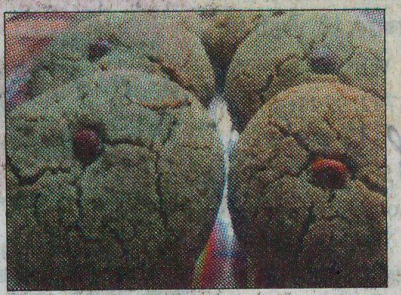

बाजरे से बने बिस्कुट। संवाद

मोटे अनाज के फायदे

मिलेट्स बने उत्पाद खाने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। मोटे अनाज में फाइबर, मिनरल, आयरन, कैल्शियम और जिंक की मात्रा ज्यादा होती है, जो सेहत के लिए अच्छी होती है, और ज्यादा देर तक एनर्जी मिलती रहती है। बाजरे के लड्डू का सेवन करने से वजन भी कम होता है।

"अपनी दिनचर्या में मिलेट्स को शामिल करना चाहिए। गेहूं के साथ किसी भी मोटे अनाज को मिलाकर उससे बने आटे से रोटी या अन्य उत्पाद बनाकर खाने चाहिए। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद रहते हैं। विवि में मोटे अनाज को लेकर शोध कार्य चल रहा है।
– डॉ. संगीता सिंधु, विभागाध्यक्ष, खाद्य पोषण विभाग, एचएयू।

ये मिलेगा रेट

250 ग्राम बिस्कुट	70 रुपये
बाजरे का केक	200 रुपये प्रति केक
चॉकलेट केक	220 रुपये प्रति केक

मोटे अनाज में शामिल फसल

बाजरा, ज्वाग, रागी, कुतकी, कोडो, सामक, कांगनी, चीना के उत्पाद शामिल है। डॉ. संगीता सिंधु ने बताया कि ये मिलेट्स भी हमें किसी न किसी रूम में खाने चाहिए। इनमें ग्लूटन नहीं होता औ धीरे-धीरे हजम होते हैं तो डायबिटिज से पीड़ित मरीज की सेहत के लिए मोटे अनाज से बने उत्पाद अच्छे रहते है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	19.12.2023	--	--

हकृवि के छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल सुविधाएं उपलब्ध करवाना हमारी प्राथमिकता : प्रो. बी.आर. काम्बोज

कुलपति ने किया शहीद मदन लाल ढींगरा बहुउद्देशीय हॉल में वातानुकूलित जिम का उद्घाटन

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 19 दिसम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए न केवल शिक्षा स्तर पर अपितु उनको शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल सुविधाएं उपलब्ध करवाना हमारी प्राथमिकता है। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के शहीद मदन लाल ढींगड़ा बहुउद्देशीय हॉल में वातानुकूलित जिम के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। कुलपति ने वातानुकूलित जिम का उद्घाटन कर इसमें जुटाई गई समस्त सुविधाओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने गिरी सेंटर में स्थापित टेबल टेनिस,

लॉन टेनिस, सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक, बॉक्सिंग, फुटबाल, बॉस्केटबॉल, बैडमिंटन हॉल व हॉकी मैदान सहित अन्य सुविधाओं का लाभ उठाकर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुके हैं। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि अच्छा स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है। क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है। उन्होंने कहा विद्यार्थियों को अपने सपनों को उड़ान देने के लिए पढ़ाई के साथ शरीर को स्वस्थ रखना बहुत जरूरी है। क्योंकि अच्छे स्वास्थ्य के बिना विद्यार्थी अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता। कुलपति ने कहा कि स्वस्थ विद्यार्थियों के भीतर सकारात्मक विचार व ऊर्जा का प्रवाह होता है, जिससे विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर अपने सपनों को साकार कर पाते हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों से आह्वान किया कि उन्हें शहीद मदन लाल ढींगड़ा बहुउद्देशीय हॉल में स्थापित जिम का लाभ उठाते हुए अपने शरीर को स्वस्थ रखें। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा ने उपरोक्त जिम में उपलब्ध सुविधाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के शहीद मदन लाल ढींगड़ा बहुउद्देशीय हॉल में स्थापित वातानुकूलित जिम के कार्डियो सेक्शन में ट्रेडमिल, क्रॉस ट्रेनर शामिल है, जबकि स्ट्रेन्थ ट्रेनिंग में मल्टीप्रेस, सीटिंग रो, लेग एक्सटेंशन, बाईसेप कर्ल, लेग प्रेस, चेस्ट प्रेस, हिप संबंधित व्यायाम के लिए मशीनें उपलब्ध हैं। इन सुविधाओं के साथ जिम में विभिन्न प्रकार की डम्बल, वेट प्लेट सहित ओलंपिक रॉड भी विद्यार्थियों को उपलब्ध होंगी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक, विद्यार्थियों सहित सह निदेशक छात्र कल्याण डॉ. सुशील लेगा, सह छात्र कल्याण निदेशक (खेल) डॉ. बलजीत गिरधर उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	19.12.2023	--	--

अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं से होगा शोधार्थियों में नवाचारों का संचार : प्रो. काम्बोज

पांच बजे ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रसायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यावहारिकता में लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में जाकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण ले सकें और विदेशी वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय में आकर नई तकनीकें व जानकारी प्राप्त कर सकें। प्रो. काम्बोज ने देश-विदेश के संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों का आभार जताया। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए कीट वैज्ञानिक डॉ. देवकी नंदन और पोलैंड के काटोवित्से विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टाकाओ इशिकावा ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।

शोधार्थी समय का सदुपयोग कर अनुसंधान पर दें जोर : डॉ. देवकी नंदन

कनाडा से पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ. देवकी नंदन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सीखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक जैव रसायनिक और जीनोमिक उपकरणों के अनुप्रयोग ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दी है जो कृषि वैज्ञानिकों को उच्च गुणात्मक व मात्रात्मक उपज विशेषताओं के साथ नई फसल किस्मों को विकसित करने में सक्षम बनाती है। उन्होंने कहा कि इन आधुनिक तकनीकों ने फसलों की उपज में वृद्धि व विकास में गहरी समझ प्रदान करने में मदद की है, जिससे फसलों का विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में बेहतर अनुकूलन संभव हो सके।

विद्यार्थियों के बिना संस्थान अधूरा : डॉ. टाकाओ

पोलैंड से पहुंचे डॉ. टाकाओ इशिकावा ने कहा कि कार्यशाला में आयोजित तकनीकी सत्रों में दिए व्याख्यानों से प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के जीन और एंजाइमों की पहचान कर फसलों के लक्षणों में सुधार करने के लिए सक्षम बनाएगा। उन्होंने विश्वविद्यालय के शोधार्थियों के कौशल की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के बिना हर संस्थान अधूरा है। जरूरत है की इन विद्यार्थियों को समय के साथ अपने आप को अपडेट करने व अपने ज्ञान, नवाचारों, प्रौद्योगिकियों और कौशल का विकास करने पर ध्यान देना चाहिए। इस कार्यशाला के आयोजक सचिव एवं बायोकेमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस, डॉ. विनोद गोयल और डॉ. अनुज राणा थे।

दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में ब्राजील के ब्रासीलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएं और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यरत प्रोफेसर [illegible] अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रहीं। उन्होंने कहा कि अनुवाद संस्कृतियों के बीच कड़ी का काम करता है और नई जानकारी, ज्ञान और विचारों को दुनिया भर में फैलाता है। अनुवाद अध्ययन लोगों को कौशल विकसित करने और भाषा को सुधारने में मदद करता है। उन्होंने प्रतिभागियों से नए क्षेत्र में नए विचार के साथ प्रोजेक्ट बनाने के लिए भी प्रेरित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	19.12.2023	--	--

हकृवि में चल रहीं दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन
कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 19 दिसंबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन एक अवलोकन' रहा। उपरोक्त दोनों कार्यशालाओं के मुख्य संरक्षक विश्व विद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्रप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में जाकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण ले सकें और विदेशी वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय में आकर नई तकनीकें व जानकारी प्राप्त कर सकें। प्रो. काम्बोज ने देश-विदेश के संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों का आभार जताया। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्व विद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. ठकाओ इशिकावा ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।

शोधार्थी समय का सदुपयोग कर अनुसंधान पर दे जोर : डॉ. देवकी नंदन

कनाडा से पहुंचे अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक डॉ देवकी नंदन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला में भाग ले रहे शोधार्थियों को समय का सदुपयोग और नया सोचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों के अनुप्रयोग ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दी है जो कृषि वैज्ञानिकों को उच्च गुणात्मक व मात्रात्मक उपज विशेषताओं के साथ नई फसल किस्मों को विकसित करने में सक्षम बनाती है। उन्होंने कहा कि इन आधुनिक तकनीकों ने फसलों की उपज में वृद्धि व विकास में गहरी समझ प्रदान करने में मदद की है, जिससे फसलों का विविध पर्यावरणीय परिस्थितियों में बेहतर अनुकूलन संभव हो सके।

विद्यार्थियों के बिना संस्थान अधूरा : डॉ. ठकाओ

पोलैंड से पहुंचे डॉ. ठकाओ इशिकावा ने कहा कि कार्यशाला में आयोजित तकनीकी सत्रों में दिए व्याख्यानों से प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के जीन और एंजाइमों को पहचान कर फसलों के लक्षणों में सुधार करने के लिए सक्षम बनाएगा। उन्होंने विश्वविद्यालय के शोधार्थियों के कौशल की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के बिना हर संस्थान अधूरा है। जरूरत है तो इन विद्यार्थियों को समय के साथ अपने ज्ञान को अपडेट करने व अपने ज्ञान, नवाचारों तौलोगिकियों और कौशल का विकास करने पर ध्यान देना चाहिए। इस कार्यशाला के आयोजक सचिव एवं बायोकेमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस, डॉ विनोद गोयल और डॉ अनुज रुणा थे। दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला में ब्राजील के ब्रासीलिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाएं और अनुवाद अध्ययन विभाग में कार्यरत प्रोफेसर वाल्मो हैजे फग्गिओं अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि अनुवाद संस्कृतियों के बीच कड़ी का काम करता है और नई जानकारी, ज्ञान और विचारों को दुनिया भर में फैलाता है। अनुवाद अध्ययन लोगों को कौशल विकसित करने और भाषा को सुधारने में मदद करता है। उन्होंने प्रतिभागियों से नए क्षेत्र में नए विचार के साथ प्रोजेक्ट बनाने के लिए भी प्रेरित किया। इस कार्यशाला के आयोजन सचिव भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अपर्णा और डॉ. पूनम मोर रही। समापन समारोह में पाठ्यक्रम निदेशक और मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया और कार्यशालाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. के. डी शर्मा ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक व शोधार्थियों के अलावा देश-विदेश के संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	19.12.2023	--	--

हकृवि में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

कनाडा, पोलैंड व ब्राजील के वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय में चल रही दो अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं का समापन हुआ। पहली 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका मुख्य विषय 'गुणात्मक और मात्रात्मक फसल उपज बढ़ाने के लिए आधुनिक जैव रासायनिक और जीनोमिक उपकरणों का अनुप्रयोग' रहा, जबकि दूसरी 10 दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय 'अनुवाद अध्ययन: एक अवलोकन' रहा।

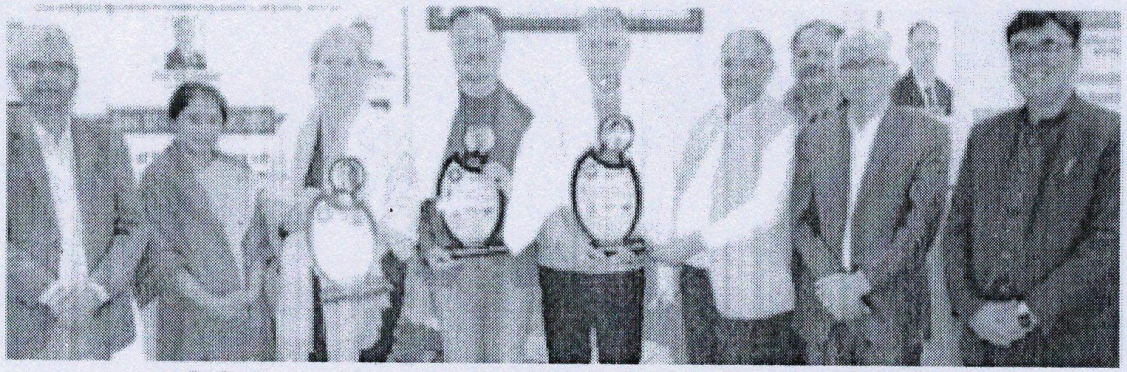

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज द्वारा कार्यशाला में उपस्थित विदेशी वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुए।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा की समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही कार्यशालाएं शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यशालाओं में भाग लेकर सीखने और प्राप्त ज्ञान व नवाचारों को व्यवहारिकता में लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी सहयोग के लिए समझौते किए, जिनके तहत वैज्ञानिक और शोधार्थी विदेश में जाकर आधुनिक तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण ले सकें और विदेशी वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय में आकर नई तकनीकें व जानकारी प्राप्त कर सकें। प्रो. काम्बोज ने देश-विदेश के संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों का आभार जताया। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ देवकी नंदन और पोलैंड के वारसॉ विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. टकाओ इशिकाव ने प्रशिक्षकों की भूमिका निभाई।